शिवधेनु

प्रीमियम मसाले एवं डीहाइड्रेटेड फल

“जहाँ भोजन एक पवित्र प्रसाद बन जाता है, और दैनिक आहार ईश्वर की ओर ले जाने वाली एक आध्यात्मिक यात्रा”

तेज प्रतिबिंब पीठ

श्री रुद्र केसरी मठ सेवा समिति बेलगाम

शिवधेनु ही क्यों?

9380553589

www.shivdhenu.com

namaste@shivdhenu.com

ॐ शिवाय नमः

SHIVDHENU™

माँ का आशीर्वाद, प्रकृति का प्रसाद

पवित्र परंपरा
शुद्ध पोषण

शिवधेनु में, प्रत्येक उत्पाद केवल एक वस्तु नहीं, बल्कि एक 'पवित्र आहुति' है जिसे गौमाता के प्रति परम श्रद्धा, प्रकृति के अनमोल वरदान और हमारे पूर्वजों के सनातनी ज्ञान से पिरोया गया है।
हम केवल भोजन नहीं बेचते; हम हर एक स्वरूप में ईश्वरीय आशीर्वाद और दिव्य कृपा आप तक पहुँचाते

प्रीमियम डिहाइड्रेटेड फ्रूट्स
प्रीमियम मसाले
रागी माल्ट । प्रीमियम मखाना

WWW.SHIVDHENU.COM

शाश्वत प्रकाश :

श्री जगद्गुरु
सिद्धारूढ़ महाराज जी

अनंत प्रकाश: श्री जगद्गुरु सिद्धारूढ़ महाराज
श्री सिद्धारूढ़ स्वामी महाराज केवल एक नाम नहीं, बल्कि चेतना का वह अथाह और अनंत महासागर हैं जहाँ व्यक्ति का 'स्वयं' (अहंकार) ब्रह्मांड के 'परम सत्य' में विलीन हो जाता है। सन 1836 से 1929 के बीच, इस धरती पर उनकी दिव्य उपस्थिति ने एक ऐसे परात्पर सत्य को उजागर किया जो जाति, पंथ और रंग की हर भंगुर सीमा को छिन्न-भिन्न कर देता है।

उद्भव (चलकापुर से अनंत तक): कर्नाटक की पवित्र माटी बिदर जिल्हे के चलकापुर में जन्मे, वे बचपन से ही सत्य की तीव्र अग्नि से प्रज्वलित थे। एक कोमल आयु में सांसारिक मोह का पूर्ण त्याग करके, उन्होंने शून्यता को खोजा और 'पूर्ण' का साक्षात्कार किया। उनकी यह यात्रा कभी भौगोलिक नहीं थी; यह आत्मा के अनंत विस्तार का एक दिव्य महाकाव्य था।

हुबली (जहाँ द्वैत विलीन होता है): महाराज जी ने हुबली को एक ऐसा पावन अभयारण्य बना दिया जहाँ राजा और प्रजा का भेद हमेशा के लिए मिट गया। "मानव सेवा ही माधव सेवा है" के संन्यासी उद्घोष के साथ, उन्होंने अद्वैत वेदांत को केवल शास्त्रों के पन्नों से मुक्त कराके मानवता की हर एक धड़कन में पिरो दिया। उनकी दिव्य उपस्थिति में, सादगी ही सबसे बड़ा वैभव थी।

मार्गदर्शक शक्ति :

परम पूज्य
श्री हरिगुरु महाराज जी

जागरण (एक शाश्वत समर्पण): केवल बारह वर्ष की निष्पाप आयु में हुए एक अलौकिक साक्षात्कार ने उनकी नियति को निश्चित कर दिया। पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से, परम पूज्य हरिगुरु महाराज निष्काम भक्ति और त्याग के एक साक्षात् और जीवंत स्वरूप के रूप में खड़े हैं। उनका जीवन अब उनका अपना नहीं, बल्कि समस्त मानवता और परम सत्य के चरणों में एक पवित्र समर्पित आहुति है।

दृष्टि से परे (जीवन का वास्तविक सौंदर्य):जीवन एक दिव्य उत्सव है जिसे केवल एक जाग्रत और ध्यान-मग्न आत्मा ही सच्चे अर्थों में महसूस कर सकती है। आंतरिक रूपांतरण के एक महान नियामक के रूप में वे इस घोर अंधकार में एक महान प्रकाश-स्तंभ की तरह हैं, जो निराश और टूटे हुए हृदयों में आशा की दिव्य धड़कन फूंकते हैं और उन्हें एक बेहद सुंदर, नव-जीवन की ओर अग्रसर करते हैं।

उत्कृष्टता का प्रमाण : जब निष्काम सेवा ही किसी की श्वास बन जाती है, तो समस्त ब्रह्मांड उनके चरणों में नतमस्तक हो जाता है। उनकी इस महा-तपस्या, अखंड साधना और मानव-कल्याण को समय ने भी प्रणाम किया है—उन्हें प्रशस्ति-पत्र के साथ 'हिंदुस्तान बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' और प्रशंसनीय 'राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार' से विभूषित किया गया है। किंतु, इस महागुरु का अंतिम पुरस्कार तो केवल एक जाग्रत और प्रबुद्ध सभ्यता का निर्माण करना है।

चेतना का विस्तार (युवाओं का जागरण): आज के इस भ्रमित और अशांत आधुनिक युग में, उनका सर्वोच्च संकल्प भटकते हुए मनों को सही दिशा देना है। युवाओं के भीतर अपनी महान सनातनी विरासत के प्रति एक प्रचंड और गौरवमयी चेतना को जगाकर, वे उन्हें केवल मार्ग नहीं दिखाते—बल्कि उन्हें उस दिव्य पथ पर पूरी गरिमा और सामर्थ्य के साथ चलने की भीतरी शक्ति प्रदान करते हैं।

तेज प्रतिबिंब पीठ
श्री रुद्र केसरी मठ सेवा समिती

मठ का परिचय और गुरु महिमा

बेळगावी की इस परम पवित्र भूमि पर, न्यू सैनिक नगर के आँचल में स्थित श्री रुद्र केसरी मठ केवल ईंट-पत्थरों का कोई भौतिक ढांचा नहीं है, बल्कि यह दिव्य चेतना और आध्यात्मिक ऊर्जा का एक प्रचंड ऊर्जस्वित केंद्र है। इस मठ के परम आधार-स्तंभ स्वयं ईश्वर के साक्षात् स्वरूप, जगद्गुरु श्री सिद्धारूढ़ महाराज हैं, जिनकी दिव्य प्रतिमा से अपार शांति, करुणा और दिव्य सामर्थ्य की आभा निरंतर प्रस्फुटित होती रहती है। इस आध्यात्मिक यात्रा को दिशा दे रहे हैं परम दृष्टा, परम पूज्य हरिगुरु महाराज, जिनके गहन आदर्शों और आत्म-शुद्धि ने इस महा-अभियान को जन्म दिया है।

कलियुग के इस दौर में जीवन का अर्थ खोजना:

आज की इस अंधी दौड़ और तीव्र-गामी दुनिया में, हम अपनी पवित्र जड़ों और हमारे महान हिंदू शास्त्रों द्वारा निर्धारित सुंदर जीवन-शैली से बहुत दूर भटक गए हैं। अपने आध्यात्मिक पथ से कट कर, आज का मनुष्य अक्सर स्वयं को अकेला, भटका हुआ और गहरे तनाव में पाता है।

मठ का मूल दर्शन हमें बड़े प्रेम से याद दिलाता है कि यह मानव जीवन—जो 84 लाख योनियों के कठिन चक्र से गुजरने के बाद प्राप्त हुआ है—एक असाधारण आशीर्वाद है। परम पूज्य हरिगुरु महाराज जी हर किसी के हाथों में एक उद्देश्यपूर्ण जीवन की बागडोर वापस सौंपने की परिकल्पना करते हैं। मठ हमें सिखाता है कि जीवन केवल किसी तरह जीवित रहने के बारे में नहीं है; यह एक गहन साधना है जिसका उद्देश्य हमें परमात्मा से जोड़ना और हमारे अस्तित्व को अंतिम पूर्णता प्रदान करना है।

आधुनिक युवाओं के बीच की दूरी को मिटाना

आज का युवा तर्क चाहता है; वे हर बात के पीछे का 'क्यों' और 'कैसे' जानना चाहते हैं। मठ इस बात को समझता है और केवल उपदेश देने से कहीं आगे जाता है। हम अपने जीवंत त्योहारों और परंपराओं के माध्यम से शास्त्रों के गहन ज्ञान को सरल भाषा में समझाते हैं (डिकोड करते हैं), जिससे यह आज के आधुनिक मन के लिए आसानी से समझ में आने योग्य बन जाता है।

भिड़े गुरुजी
(श्री शिवप्रतिष्ठान हिन्दुस्तान) के साथ

श्री अयोध्या राम मंदिर कोषाध्यक्ष, श्री गोविंद गिरि महाराज जी के साथ

योग गुरु श्री रामदेव बाबा के साथ

दिवंगत केंद्रीय रेल मंत्री,
श्री सुरेश अंगड़ी जी के साथ

श्री चंद्रशेखर स्वामी जी
(हुक्केरी मठ) के साथ

रमाकांत कोंडुस्कर (श्री राम सेना हिंदुस्तान अध्यक्ष) के साथ

दक्षिण बेलगावी विधायक, श्री
अभय पाटिल जी के साथ

लेकव्यू हॉस्पिटल के एम.डी.
डॉ. गिरीश के. सोनवलकर
के साथ

राष्ट्रीय सम्मान एवं मान-अलंकरण

HINDUSTAN BOOK OF RECORDS
India's Most Respected Recognition
Congratulations!
Param Pujya Shri Hariguru Maharaj Ji
Hindu Monk (Mathadish) - Hindu Spiritual Guru And Motivational Speaker
This Record Is Officially Recognized And Registered In The Hindustan Book Of Records (India) For Demonstrating Outstanding Excellence, Dedication, And Remarkable Achievement That Has Set A New Benchmark In Its Category.
Your Extraordinary Effort And Accomplishment Have Been Verified And Appreciated By The Hindustan Book Of Records Team.
Congratulations On Your Continued Success In Building A Better Future!

SociallyPoint Foundation (Regd.)
NATIONAL PRIDE AWARD
राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार
This Certificate is Proudly Presented To
SHRI HARIGURU MAHARAJ JI
in Respect And Appreciation For Your Commendable Work Towards Society
AWARD WINNING
(DIRECTOR)
(CHAIRMAN)
ISSUED DATE : 05 JULY 2023
INDORE, MADHYAPRADESH

नवरात्रि महोत्सव

शिवधेनु

माँ का आशीर्वाद, प्रकृति का प्रसाद

अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक जगद्गुरु श्री सिद्धारूढ़ महाराज जी के असीम एवं अटूट आशीर्वाद से, तथा परम पूज्य श्री हरिगुरु महाराज जी की दिव्य संकल्प-शक्ति, तपस्या और आत्म-साक्षात्कार के पावन प्रताप से, 'श्री मठ' की पवित्र नींव पर इस अलौकिक एवं आध्यात्मिक प्रयास का मंगलमय उदय हुआ है। यह संसार के लिए केवल एक साधारण व्यावसायिक ब्रांड नहीं है, बल्कि इस घोर कलियुग के वातावरण में भटके हुए मानव जीवन को उसकी सबसे शुद्ध, सात्त्विक और मूल चेतना के साथ पुन: जोड़ने का साक्षात् ईश्वरीय मार्ग है।

वास्तव में शिवधेनु क्या है?

कलियुग की इस अनवरत भागदौड़ में, जहाँ संपूर्ण मानव जाति जाने-अनजाने में अपने ही कर्मों के भारी बोझ तले दबी जा रही है, वहाँ 'शिवधेनु' एक ऐसे पावन नाम के रूप में उभरता है जो आने वाले समय में मनुष्य के इन कर्मों का शोधन कर उन्हें पवित्र करेगा और जीवन को उसके सच्चे अर्थ व पूर्णता की ओर ले जाएगा।

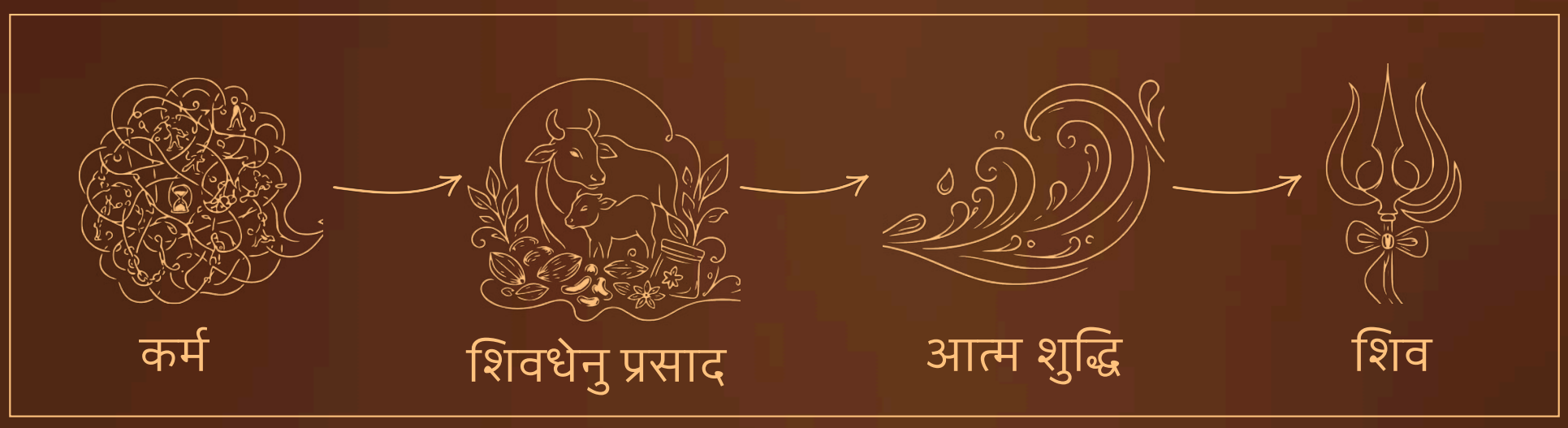

पूर्णता और संतुष्टि अब इस बाहरी, शोर-गुल से भरी सांसारिक दुनिया में नहीं मिलती, बल्कि वह तो केवल आपके भीतर विद्यमान है।

शिवधेनु आपके जीवन में एक मौन और नित्य मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। इस 'प्रसाद' से तैयार किए गए हर एक निवाले के साथ, मनुष्य को धीरे-धीरे उसके दिव्य मूल स्वरूप की ओर वापस मोड़ा जाता है, जो आपकी एक साधारण रसोई को आत्मिक जागरण के एक पवित्र 'गर्भगृह' में बदल देता है।

दिव्य दर्शन : माँ का आशीर्वाद

हम पूरी निष्ठा के साथ यह उद्घोष करते हैं और गवाही देते हैं कि गौमाता केवल एक पशु नहीं हैं, बल्कि 'करुणामयी जगत जननी' का जीवंत रूप हैं। जहाँ हमारे शास्त्रों में वर्णित उनकी महिमा हमारा आधार है, वहीं हमारा सत्य इससे भी कहीं अधिक गहरा है। यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमने सनातन परंपरा में जन्म लिया है। गर्भ से ही इन पवित्र मूल्यों से बुने होने के कारण, दिव्य गौमाता की सेवा करने का अवसर हमारे जीवन का सबसे बड़ा वरदान है। उनके पावन चरणों में अपनी सेवा अर्पित करना ही शिवधेनु के उद्देश्य का सबसे शुद्ध और अंतिम आधार है।

संपूर्ण ब्रह्मांड का वात्सल्य उनकी करुणामयी आँखों में झलकता है। उनके रोम-रोम में सभी देवी-देवताओं के निवास के साथ, हम उनकी पवित्र उपस्थिति में ब्रह्मांड की सकारात्मक चेतना और बिना किसी शर्त के मिलने वाले दिव्य प्रेम का अनुभव करते हैं। शिवधेनु का संकल्प अटूट है। हमारी सेवा की यह शुद्ध भावना तब तक बिना डिगे जारी रहेगी, जब तक हमारा देश पूरे गर्व और सम्मान के साथ गौमाता को 'राष्ट्रमाता' के रूप में घोषित और स्थापित नहीं कर देता। यही हमारा असीम विश्वास है, यही हमारा शाश्वत सत्य है, और यही शिवधेनु की आत्मा है।

शिवधेनु से जुड़कर, आप केवल एक शुद्ध आहार को नहीं अपना रहे हैं, बल्कि एक महान आध्यात्मिक पुण्य—गौ सेवा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा बन रहे हैं।

प्रत्येक खरीद पर सीधा 2% का योगदान: आपके द्वारा खरीदे जाने वाले प्रत्येक प्रसाद की राशि का सीधा 2% हिस्सा विशेष रूप से गौमाता की रक्षा के लिए समर्पित किया जाएगा।

राजस्व (कमाई) का 20% समर्पण: शिवधेनु के कुल राजस्व का 20% हिस्सा पूरी तरह से गौमाता की सेवा और सुरक्षा के लिए समर्पित होगा।

आइए, शिवधेनु के इस पवित्र प्रसाद को अपनाएं। अपने विचारों को शुद्ध करें, अपने कर्मों को पावन बनाएं और गौमाता की रक्षा के इस दिव्य मिशन का हिस्सा बनें।

'उत्पाद' और 'प्रसाद' के बीच का अंतर'

हम जो कुछ भी आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं, उसे यह संसार भले ही एक 'उत्पाद' (वस्तु) के दृष्टिकोण से देखे, किंतु हम उसे पूर्णत: एक 'प्रसाद' (एक परम पवित्र भेंट) के रूप में ही आप तक लाते हैं।

भावना ही सब कुछ है :

जब हम घर पर अपना कोई पसंदीदा भोजन बनाते हैं या किसी महंगे भोजनालय में खाते हैं, तो उसका स्वाद केवल एक शारीरिक अनुभव है। किंतु, वही भोजन जब किसी मठ, मंदिर या देवाधिदेव महादेव के चरणों में पूरी श्रद्धा से अर्पित किया जाता है, तो वह सांसारिक स्वाद से मुक्त होकर 'प्रसाद' में परिवर्तित हो जाता है। सनातनी शास्त्रों से जुड़ा हर एक व्यक्ति प्रसाद के इस अलौकिक और गहरे महत्व को भली-भाँति पहचानता है। जिस क्षण हम इसे ग्रहण करते हैं, हमारी आत्मा को एक परम तृप्ति और आनंद प्राप्त होता है।

शारीरिक स्वाद

आत्मा का संतोष और ईश्वरीय कृपा

जब तक हम प्रकृति के अनाजों और मसालों को केवल एक व्यावसायिक उत्पाद समझकर खाते हैं, तब तक मानव शरीर काम, क्रोध, मोह और सांसारिक कामनाओं के जाल में उलझा रहता है। किंतु, मानवता के इस धरती पर आने से बहुत पहले, उस परम पिता परमेश्वर ने हमारे शरीर को पूरी तरह संतुलित और रोग-मुक्त रखने के लिए ही इन वनस्पतियों और फलों की रचना की थी। जगन्नियंता के इन उपहारों को जब आप ईश्वर का 'प्रसाद' समझकर स्वीकार करते हैं, तो आपका शरीर, आपके विचार और आपकी आत्मा पूरी तरह से शुद्ध और 'सात्विक' हो जाते हैं।

ब्रह्मांड की शाश्वत माता

शिवधेनु केवल किसी साधारण व्यवसाय या व्यापार का नाम नहीं है; बल्कि यह सदियों से अंधकार में सोई हुई हमारी मानवीय चेतना और आत्मा को फिर से जाग्रत करने वाली एक शक्तिशाली सिंहगर्जना (शंखनाद) है।

हमने अपने ब्रांड की मूल पहचान और अस्तित्व में 'धेनु' शब्द को बहुत ही पवित्रता और गहराई से पिरोया है, तथा 'साक्षात् गौमाता' को अपने सर्वोच्च और परम प्रतीक के रूप में अंगीकार किया है। हमने इस सेवा मार्ग का चयन इसलिए किया क्योंकि आज की इस आधुनिक दुनिया की अंधी और अनवरत भागदौड़ के बीच, हम इस परम सत्य को पूरी तरह से विस्मृत कर चुके हैं कि वास्तव में गौमाता का हमारे जीवन और संस्कृति में क्या अलौकिक महत्व है।

क्षण भर के लिए ठहरिए और आत्मचिंतन कीजिए: इस महान और पवित्र सनातन भूमि पर जहाँ कभी आदि काल से गौमाता को 'जगत जननी' के सर्वोच्च और गरिमापूर्ण पद से श्रद्धापूर्वक पूजा जाता था, आज इस घोर कलियुग में उनका पावन अस्तित्व कहाँ आकर सिमट गया है? और वास्तव में आज की इस आधुनिक दुनिया में उनका असली, सम्मानजनक और गौरवपूर्ण स्थान क्या होना चाहिए?

गौमाता की दिव्य धरोहर

सनातन हिंदू संस्कृति और परंपरा में, साक्षात् गौमाता को संपूर्ण चराचर ब्रह्मांड की जननी तथा परम आदरणीय 'राष्ट्रमाता' के रूप में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

हमारे पावन वेदों, पुराणों और धर्मग्रंथों में उनके इस उच्च आध्यात्मिक स्वरूप और महिमा का अत्यंत विशद व गहरा वर्णन किया गया है। इस धरा पर किसी भी माता के गर्भ से जन्म लेने वाला प्रत्येक वह मनुष्य, जिसने गौमाता के अमृत रूपी दूध को पीकर अपने शरीर का पोषण किया है और उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त किया है, उस पर अपनी इस जीवनदायिनी माता के ऋण (कर्ज) को चुकाने का एक परम और अनिवार्य कर्तव्य है।

"वह परमेश्वर—जो अपनी एक एकमात्र सांस में हजारों ब्रह्मांडों को समाए रखते हैं, और जो स्वयं साक्षात् महाविष्णु के मूल स्रोत हैं—इस धरती की धूल पर कदम रखते हैं। वे अपनी तृप्ति के लिए न तो किसी स्वर्ण पात्र (सोने के कटोरे) की मांग करते हैं, और न ही माता यशोदा के मिट्टी के कटोरे की प्रतीक्षा करते हैं। इसके विपरीत, संपूर्ण ब्रह्मांड के वे स्वामी स्वयं अपने घुटने टेकते हैं, और अत्यंत विनम्र होकर साक्षात् गौमाता के स्तनों से सीधे दूध पीने के लिए झुक जाते हैं। और जब गौमाता अगाध वात्सल्य से उस जगदीश्वर को प्रेमपूर्वक चाटती हैं, तब सृष्टि का एक अत्यंत गूढ़ और महान आध्यात्मिक रहस्य प्रकट होता है।"

या आपने कभी सोचा है कि स्वयं ब्रह्मांड के स्वामी (परमेश्वर) को बुरी नज़र से कौन बचा सकता है? द्वापर युग में, जब बालक कृष्ण को किसी की बुरी नज़र लग गई थी, तब माता यशोदा ने किसी जड़ी-बूटी या तांत्रिक मंत्रों का सहारा नहीं लिया; उन्होंने गौमाता की शरण ली। वह प्रभु कृष्ण को गौशाला में ले जातीं और नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने के लिए गाय की पूंछ से उनका उतारा (नज़र ठीक) करती थीं। तीनों लोकों के स्वामी की परम रक्षक स्वयं गौमाता थीं।

लेकिन इस कलियुग में हमने क्या किया है?

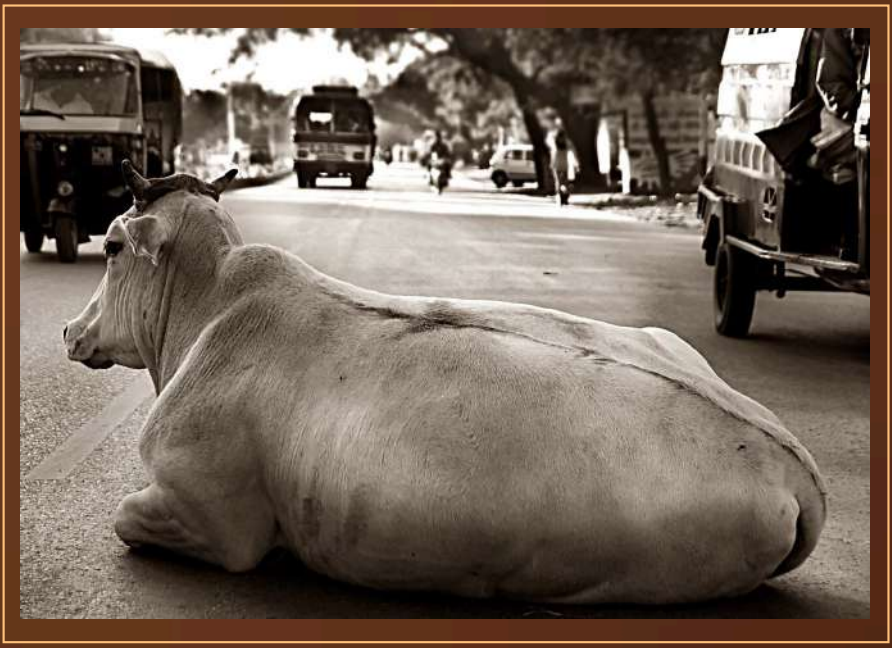

यह हमारे समय की सबसे बड़ी और सबसे कड़वी विडंबना है कि जो 'जगत जननी' हैं, जिनके मात्र स्पर्श में गंभीर से गंभीर बीमारियों को ठीक करने की शक्ति है और जो कभी हमारे घरों के सबसे पवित्र आंगनों की शोभा हुआ करती थीं, आज सड़कों पर बेसहारा भटकने के लिए छोड़ दी गई हैं। हम एक ऐसे दौर में पहुँच चुके हैं जहाँ विदेशी नस्ल के कुत्ते हमारे सोफों पर आराम से बैठते हैं—जो हमें सिर्फ एक भावनात्मक लगाव देते हैं जबकि हमारी अपनी माता, जिनके बिना हमारा अस्तित्व ही असंभव है, दर-दर भटकने को मजबूर हैं।

हम यह भूल चुके हैं कि गौमाता उपचार (हीलिंग) का एक जीवंत और सांस लेता हुआ साक्षात् धाम हैं। हमारे ग्रंथों, वेदों और आयुर्वेद ने सदियों से यह उद्घोष किया है कि गौमाता की उपस्थिति में समय बिताने मात्र से ही गंभीर से गंभीर शारीरिक कष्ट दूर हो जाते हैं।

आज, आधुनिक विज्ञान और मनोविज्ञान भी इस प्राचीन सत्य की पुष्टि करते हैं, जिसे अब 'काउ कडलिंग' (Cow Cuddling) थेरेपी के रूप में जाना जाता है। जब हम गौमाता के समीप होते हैं, उन्हें दुलारते हैं और अपनी सांसों को उनकी सांसों की गति के अनुकूल (संरेखित) करते हैं, तो हमारा तंत्रिका तंत्र (Nervous System) तुरंत शांत हो जाता है। शरीर का स्ट्रेस हार्मोन (कोर्टिसोल) कम हो जाता है और हीलिंग हार्मोन (ऑक्सीटोसिन) बढ़ जाता है, जो प्राकृतिक रूप से अस्थमा और हाई ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियों को ठीक करने में मदद करता है।

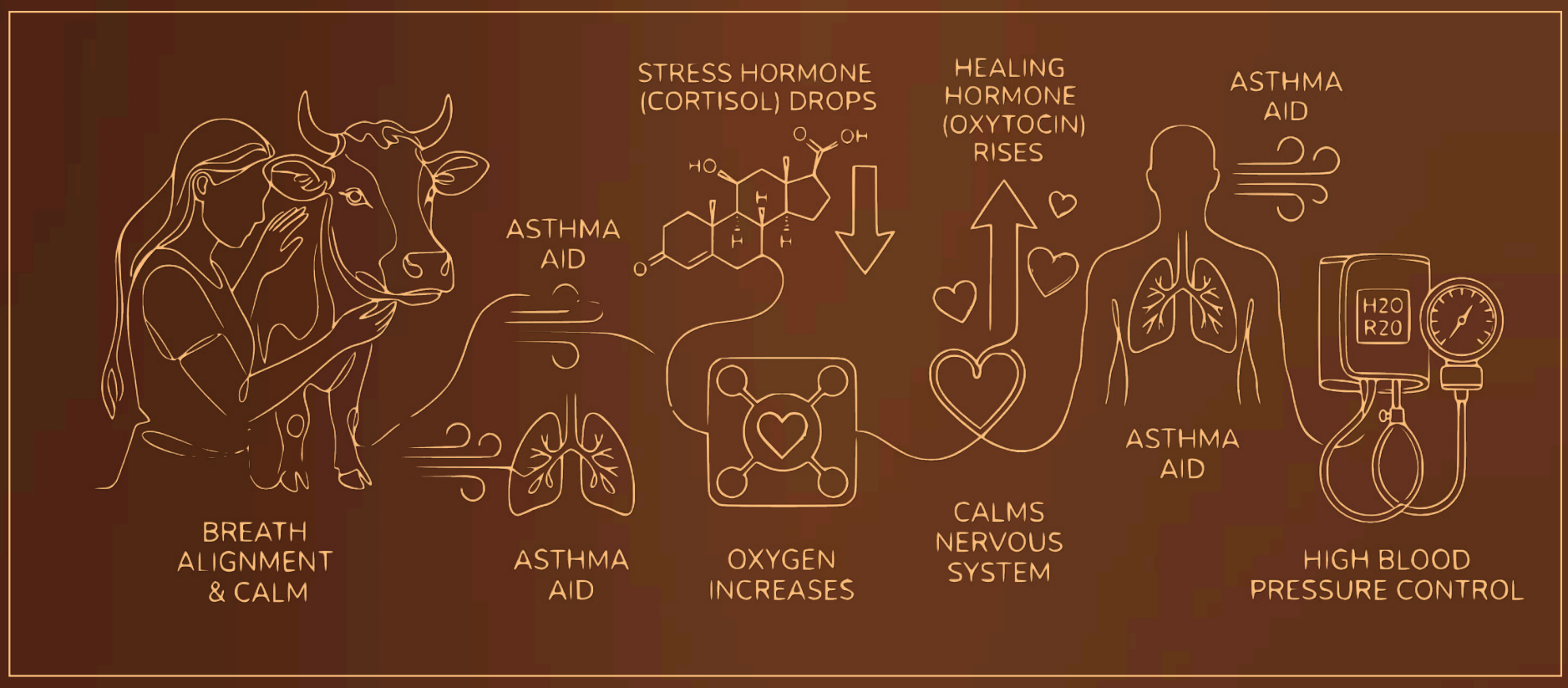

"जिस प्रकार माता-पिता को थोड़ी सी भी तकलीफ होने पर संतान दुनिया के किसी भी कोने से दौड़ी चली आती है, ठीक उसी प्रकार शिवधेनु का यह अटूट संकल्प खड़ा है।"

यदि सड़कों पर भटकती हुई किसी भी गौमाता को कभी कोई ठेस पहुँचती है, वे घायल होती हैं, या दर्द में होती हैं, तो शिवधेनु उनकी सहायता के लिए सबसे पहले पहुँचने वाला ब्रांड होगा। हम उनके उपचार, उन्हें सशक्त बनाने और समाज में उनके देवत्व (सिद्धत्व) तथा राष्ट्रीय सम्मान (राष्ट्रीयत्व) के अधिकार को पुनस्थापित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।

आइए, जगत जननी को उनके खोए हुए गौरवपूर्ण स्थान पर वापस लाने के लिए एकसाथ आएं। शिवधेनु से हाथ मिलाएँ—क्योंकि जब 'धेनु' सुरक्षित होगी, तभी 'शिव' की कृपा वास्तव में फलीभूत होगी।

शिवधेनु: हर भोजन को 'दिव्य प्रसाद' में बदलना

"यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे"

जो कुछ भी इस ब्रह्मांड में है, वही इस मानव शरीर के भीतर भी निवास करता है।

वैदिक परंपरा में, भोजन करना केवल पेट भरने की एक क्रिया नहीं है; यह एक पवित्र दैनिक अनुष्ठान है—एक गहन 'यज्ञ' (अग्नि साधना)। हमारे प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, हमारे भीतर की पाचक अग्नि (जठराग्नि) कोई साधारण जैविक प्रक्रिया नहीं है। यह साक्षात् भगवान शिव की ब्रह्मांडीय अग्नि, 'वैश्वानर' का ही शाब्दिक प्रकटीकरण है। इसी पवित्र आंतरिक अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिए, शिवधेनु आपके लिए सबसे शुद्ध और निष्कलंक (मिलावट रहित) सामग्रियां लेकर आता है। दैनिक पोषण को एक पावन प्रसाद के रूप में उन्नत करके, हम आपके भीतर के ब्रह्मांड का सम्मान करने में आपकी मदद करते हैं।

हमारी पवित्रता की भेंट

हम प्रकृति के इस पवित्र खजाने को इसकी सर्वोच्च पारंपरिक गरिमा को बनाए रखते हुए, सीधे आपके घर तक ला रहे हैं:

पवित्र मसाले: शुद्ध मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर, हल्दी पाउडर, अमचूर (सूखा आम) पाउडर और रागी माल्ट पाउडर।

प्रीमियम डीहाइड्रेटेड फ्रूट्स (निर्जलीकृत फल): फलों के रूप में प्रकृति का अमूल्य प्रसाद, जिसमें परमेश्वर ने शरीर को रोगमुक्त रखने के लिए आवश्यक सभी महत्वपूर्ण विटामिन पहले से ही पिरोए हुए हैं।

दिव्य मखाना: कमल के फूल से प्राप्त एक पवित्र धरोहर। ६ अनूठे स्वादों में उपलब्ध, जो आपको उत्तम स्वास्थ्य की ओर ले जाने वाला एक शुद्ध, हल्का और क्रिस्पी (कुरकुरा) माध्यम है।

पवित्र मसाले

प्रीमियम डीहाइड्रेटेड फ्रूट्स

दिव्य माखना

रागी माल्ट

आपके लिए हमारी मंगलकामना

हमारे हाथों से आपके घर तक, ये पवित्र उत्पाद पूर्ण समर्पण और श्रद्धा के साथ तैयार किए गए हैं। प्रकृति का यह शुद्ध और पावन अंश आपके और आपके परिवार के जीवन में उत्तम स्वास्थ्य, सुख और नई ऊर्जा लेकर आए।

हमारे दिव्य मसाले और उनका वैदिक महत्व

हरिद्रा हल्दी पाउडर

"हरिद्रा सुवर्णवर्णाभा, सर्वदोषविनाशिनी"

सोने जैसी चमक बिखेरने वाली हल्दी को शास्त्रों में सूर्य की जीवंत ऊर्जा (तेज) के साक्षात् रूप में पूजा गया है। आधुनिक युग के इस प्रदूषित वातावरण में, शिवधेनु की हल्दी आपकी परम सुरक्षा ढाल के रूप में कार्य करती है। यह रक्त वाहिकाओं (Blood Vessels) को शुद्ध करती है और जीवन के मुख्य आधार यानी 'प्राण' के निर्बाध प्रवाह को गति देती है। आपके भीतर के आंतरिक अंधकार (तमस) को दूर करके, यह केवल पाचन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आपके भीतर एक शुद्ध, सात्त्विक चेतना को जाग्रत करती है।

सोम धनिया पाउडर

"धान्यकं शीतवीर्यं च, पित्तदाहविनाशनम्"

ब्रह्मांड का मूल नियम ही 'संतुलन' है। जहाँ तीव्र अग्नि होती है, वहाँ शीतलता का होना भी अनिवार्य है। शास्त्र धनिये की तुलना 'सोम' से करते हैं—जो चंद्रमा की अमृत जैसी, शांत करने वाली ऊर्जा है। जब आधुनिक जीवन का तनाव और क्रोध आपके शरीर की गर्मी (पित्त) को बिगाड़ देता है, तब शिवधेनु का धनिया आपके मन और शरीर दोनों पर असीम शीतलता और आध्यात्मिक शांति की वर्षा करता है, जिससे आपका भोजन हल्का और आपकी आत्मा केंद्रित होती है।

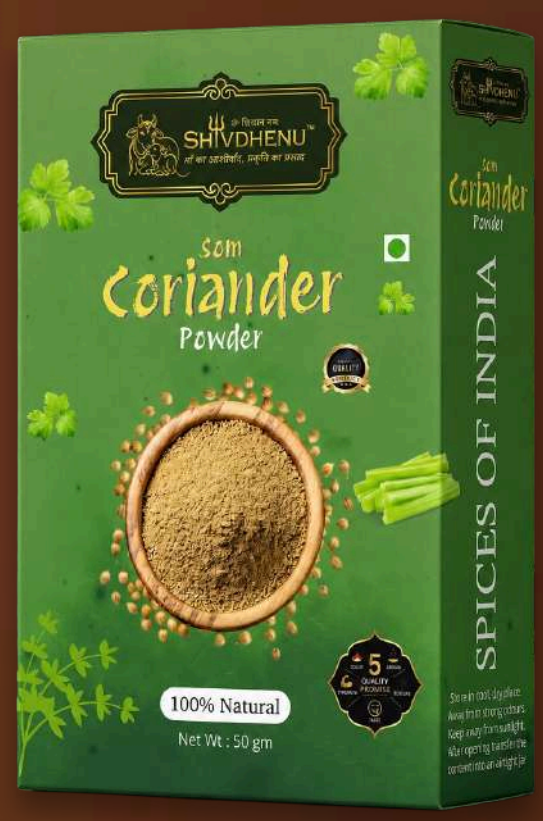

तेजस मिर्च पाउडर

कटु रसो विशोधन:, तंद्रा-आलस्य-नाशन:

तीखापन सिर्फ एक स्वाद नहीं है; यह प्रकृति की उग्र और सब कुछ बदल देने वाली 'रुद्र' ऊर्जा है। जब शरीर सुस्ती, भारी कफ या गतिहीनता (तमस) के बोझ से दब जाता है, तब शिवधेनु की लाल मिर्च की शुद्ध, मिलावट रहित तीक्ष्णता एक दिव्य अस्त्र की तरह काम करती है। यह शरीर की ऊर्जा के अवरोधों (Blockages) को साफ करती है और चयापचय (Metabolism) की अग्नि को प्रज्वलित करती है। यदि इसे संतुलित मात्रा में ग्रहण किया जाए, तो यह इंद्रियों को जाग्रत करती है और एक गतिशील, उद्देश्यपूर्ण कर्म (रजोगुण) की प्रेरणा देती है।

आम्र तत्व अमचूर पाउडर

अम्लो हृद्य: प्रबोधन:, प्राणसंचार-कारक:

सनातन धर्म में, आम के पत्ते हर शुभ अनुष्ठान के लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि इस वृक्ष की तुलना साक्षात् दिव्य रस (अमृत) से की गई है। शिवधेनु का अमचूर इसी पवित्र वृक्ष का एक उत्कृष्ट अर्क (Essence) है। इसका खट्टा-मीठा स्वाद केवल स्वाद कलिकाओं (Palate) को ही आनंदित नहीं करता—बल्कि यह वात दोष को शांत करता है, सुस्त पड़े तंत्रिका तंत्र (Nervous System) को जाग्रत करता है, और आपके भोजन में एक ऐसी अलौकिक ताजगी भर देता है जो आत्मा को तुरंत प्रफुल्लित और आनंदित कर देती है।

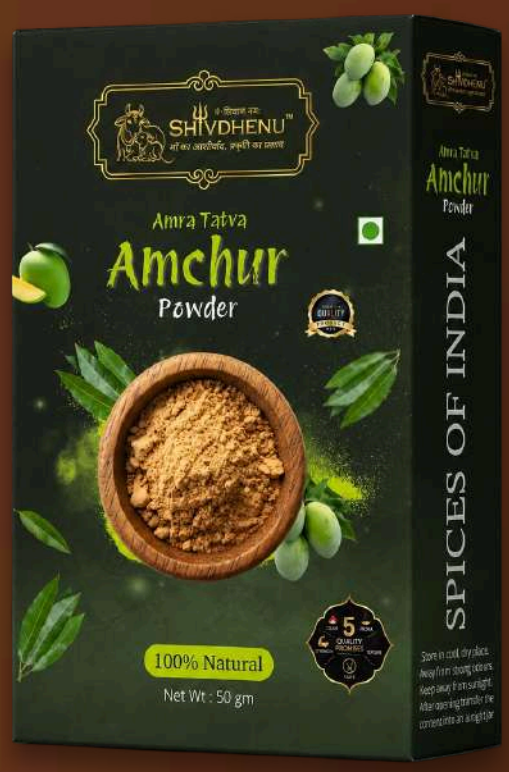

हमारे मसाले केवल आपकी स्वाद कलिकाओं को लुभाने के लिए तैयार नहीं किए गए हैं; ये आपके भीतर की दिव्य अग्नि (जठराग्नि) में अर्पित की जाने वाली 'पवित्र आहुतियां' हैं।

शिवधेनु का मार्ग: हमारा नवप्रवर्तन दर्शन

1. दिव्य संकल्प

हमारी यात्रा एक पवित्र संकल्प से शुरू होती है। आज की दुनिया को जिस सात्त्विक (शुद्ध) और जीवनदायी पोषण की सख्त ज़रूरत है, उसे तैयार करने के लिए हमने वैदिक ज्ञान को आत्मसात किया है।

2. जनकल्याण

हमारा उद्देश्य जनसेवा है। हम शुद्ध और मिलावट रहित भोजन की उपचारात्मक व परिवर्तनकारी शक्ति में मानवता के विश्वास को पुन: स्थापित करना चाहते हैं।

3. पवित्र निर्माण

सामग्री तैयार करना एक पवित्र कार्य है। हम ऐसे मिश्रण तैयार करते हैं जो प्राकृतिक रूप से जठराग्नि (पाचक अग्नि) को प्रज्वलित करते हैं, और शरीर को एक पवित्र आहुति के रूप में पोषित करते हैं।

4. आत्मीय वितरण

हम अपनी कृतियों को प्रसाद (कृपा) के रूप में साझा करते हैं। हम सफलता को केवल स्वाद से नहीं, बल्कि उपभोक्ता द्वारा महसूस की जाने वाली प्राण ऊर्जा और संतुष्टि से मापते हैं।

5. पूर्ण पवित्रता

विकास के लिए शुचिता (पवित्रता) आवश्यक है। बड़े पैमाने पर काम करते हुए भी हम पूर्ण शुद्धता बनाए रखते हैं, ताकि मशीनीकरण कभी भी हमारी सामग्रियों के सत्त्व या पारंपरिक मानकों को कम न कर सके।

6. पवित्र समर्पण

यह अंतिम चरण निरंतर, शुद्ध भेंट देने और समाज के कल्याण के प्रति हमेशा समर्पित रहने की एक प्रतिबद्धता है।

हमारा दर्शन केवल एक प्रक्रिया नहीं है; यह एक तीर्थयात्रा है। वैदिक ज्ञान के साथ 'दिव्य संकल्प' को जोड़कर, हम पोषण को जीवनदायी ऊर्जा के स्रोत में बदल देते हैं। पहले 'पवित्र निर्माण' से लेकर 'आत्मीय वितरण' के अंतिम कार्य तक, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि 'पूर्ण पवित्रता' केवल एक लक्ष्य नहीं—बल्कि आपके और पूरी दुनिया के प्रति हमारा अटूट वचन है।

साक्षात मातृशक्ति: सेवा, संकल्प और स्वावलंबन का आध्यात्मिक संगम

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:"

जहाँ नारी का सम्मान और उसकी ऊर्जा को सही दिशा मिलती है, वहाँ दिव्यता स्वयं प्रकट होती है।

अब तक इस शिवधेनु महा-यात्रा में आपने देखा कि कैसे प्रकृति के हर कण को भगवान शिव के चरणों का 'प्रसाद' बनाया जा रहा है। लेकिन इस दिव्य प्रसाद को तैयार करने वाले हाथ किसके हैं? यह शिवधेनु का परम सौभाग्य है कि इसकी निर्माण इकाई (Manufacturing Unit) के रूप में स्वयं साक्षात मातृशक्ति को इस सेवा का माध्यम बनने का अवसर मिला है।

शिवधेनु केवल एक रोजगार का जरिया नहीं है, बल्कि यह रुद्र केसरी मठ की आध्यात्मिक छत्रछाया में महिलाओं के उत्थान, गरिमा और आत्म-निर्भरता का एक जीवंत अनुष्ठान है। यहाँ हर माता और बहन सिर्फ एक कर्मचारी नहीं, बल्कि इस दिव्य यज्ञ की 'ऋत्विक' (आहुति देने वाली) हैं, जो समाज को शुद्धता और पोषण परोस रही हैं.

कंठ में शिव नाम, हाथों में पवित्र काम"

इस निर्माण इकाई की सबसे बड़ी विशेषता और रीढ़ यहाँ की दिव्यता और अनुशासन है, जिसकी स्थापना स्वयं परम पूज्य श्री हरि गुरु महाराज जी ने अपने दिव्य मार्गदर्शन से की है। यहाँ कार्य केवल शारीरिक श्रम नहीं, बल्कि एक सक्रिय साधना है.

मंत्र चेतना : इकाई में कदम रखते ही पूरा वातावरण आध्यात्मिक तरंगों से भर जाता है। यहाँ कार्य करते समय हर महिला के कंठ में निरंतर 'ॐ नम: शिवाय' महामंत्र का जाप चलता रहता है। इस मंत्र की ध्वनि से न केवल वहाँ की ऊर्जा शुद्ध होती है, बल्कि तैयार होने वाले मसालों और प्रसादम में भी शिव-कृपा का संचार होता है।

परम पवित्रता का अनुशासन: पूर्ण सात्विक और पारंपरिक मर्यादा के साथ, विशेष आध्यात्मिक पहनावे और स्वच्छता के उच्चतम नियमों का पालन करते हुए ही सेवा कार्य किया जाता है। जब पवित्र विचारों और मंत्र-जाप के साथ भोजन या प्रसाद तैयार होता है, तभी वह उपभोक्ता की 'आत्म-शुद्धि' का कारण बनता है।

मठ की करुणा, शिवधेनु का आधार; साक्षात मातृशक्ति, सेवा का विस्तार :

श्री रुद्र केसरी मठ हमेशा से समाज के कल्याण और भटके हुए मनों को सही दिशा देने का केंद्र रहा है। परम पूज्य हरि गुरु महाराज जी के संकल्पों को भूमि पर उतारते हुए, शिवधेनु ने समाज की महिलाओं को केवल रोजगार नहीं, बल्कि एक 'सेवा भाव' का मंच दिया है।

यह शुरुआत केवल कुछ हाथों से हुई है, लेकिन शिवधेनु का संकल्प अनंत है। आने वाले समय में, देश की और भी कई सैकड़ों-हजारों असहाय, ग्रामीण और जरूरतमंद महिलाओं को इस सेवा का मुख्य आधार बनाकर आगे ले जाया जाएगा। मातृशक्ति की इस ऊर्जा को जोड़कर शिवधेनु समाज में एक व्यापक और सकारात्मक आध्यात्मिक प्रभाव पैदा कर रहा है।

हमारी टीम

परम पूज्य श्री हरिगुरु महाराज जी

मैनेजिंग डायरेक्टर

अनु अग्रवाल

डायरेक्टर

गोविंद अग्रवाल

डायरेक्टर एंड ऑपरेटिंग हेड

दीपक अग्रवाल

मार्केटिंग हेड

कृपा की एक भेंट,
हमारी आत्मा से आपकी आत्मा तक

आधुनिक युग की इस अनवरत दौड़भाग में, पूर्ण पवित्रता का एक क्षण खोजना भी एक असंभव प्रयास जैसा लग सकता है। हम आत्मा की उस अनकही थकान को समझते हैं। यही कारण है कि शिवधेनु को कभी भी केवल एक व्यवसाय के रूप में नहीं बनाया गया था—इसका जन्म तो एक पवित्र प्रयास और एक दिव्य मार्ग के रूप में हुआ था, ताकि आपको आपके सबसे शुद्ध, मूल अस्तित्व से जोड़ा जा सके।

हमारे द्वारा दी जाने वाली मसालों की हर सुनहरी कतरन और हर एक प्रीमियम डीहाइड्रेटेड फ्रूट को केवल एक ही प्रार्थना के साथ तैयार किया गया है: आपका परम कल्याण। हमने अपने प्राचीन हिंदू शास्त्रों के शाश्वत ज्ञान, जगद्गुरु सिद्धारूढ़ महाराज जी और परम पूज्य श्री हरिगुरु महाराज जी के गहन आशीर्वाद, और गौमाता के प्रति अपने अटूट समर्पण को इन उपहारों में उंडेल दिया है। हम यह सब इसलिए करते हैं, ताकि आप अपने दैनिक जीवन में उस दिव्यता का अनुभव कर सकें।

जब आप शिवधेनु को अपने घर लाते हैं, तो आप केवल भोजन तैयार नहीं कर रहे होते; आप अपनी रसोई को आध्यात्मिक जागृति के एक पवित्र मंदिर (गर्भगृह) में बदल रहे होते हैं। इस प्रसाद को स्वीकार करके, आप सक्रिय रूप से अपने कर्मों को शुद्ध कर रहे हैं और अपने परिवार को ब्रह्मांड की माता (जगत जननी) के सुरक्षात्मक प्रेम में लपेट रहे हैं। हमने अपने राजस्व (कमाई) और अपने जीवन को इस प्राचीन सत्य को बनाए रखने और गौमाता की पूरी तरह से रक्षा करने के लिए समर्पित कर दिया है, ताकि आप सदा सदाचार, स्वास्थ्य और शांति के मार्ग पर चल सकें।

ईश्वर करे कि यह पवित्र प्रसाद स्वाभाविक रूप से आपके भीतर की दिव्य अग्नि (जठराग्नि) को प्रज्वलित करे, आपके मन में असीम शांति लाए और आपके अस्तित्व के खोए हुए सामंजस्य को फिर से बहाल करे।

यह हमारे जीवन की तपस्या और सर्वोच्च आध्यात्मिक पुण्य है, जो विनम्रतापूर्वक आपके चरणों में अर्पित है।

धन्यवाद..!

शिवधेनु (ओपीसी) प्राइवेट लिमिटेड
पैकेजिंग यूनिट: - सर्वे नं. 18/2, प्लॉट नं. 24 और 25,
न्यू सैनिक नगर, लक्ष्मीटेक के पीछे,
लैंडमार्क (प्रमुख चिन्ह):- तेज प्रतिबिंब पीठ,
बेलगावी-591108

शिवधेनु (ओपीसी) प्राइवेट लिमिटेड
पंजीकृत कार्यालय (रजिस्टर्ड ऑफिस): -
#69, एसएलवी श्रेयस, 001, 10वां क्रॉस, सेक्टर ए,
पहली मंजिल, यलहंका न्यू टाउन,
बैंगलोर, कर्नाटक, भारत - 560064

संपर्क सूत्र: 93805 53589 / 78924 27827

ईमेल आईडी: namaste@shivdhenu.com

हमारी वेबसाइट: www.shivdhenu.com